01-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - चैरिटी बिगेन्स एट होम, अपने परिवार वालों को ज्ञान सुनाओ, अपने हमजिन्स का कल्याण करो"

प्रश्नः-किस श्रीमत का पालन करने वाले बच्चे अपनी अवस्था को एकरस बना सकते हैं?

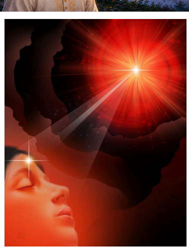

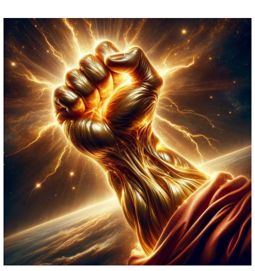

उत्तर:-अवस्था को एकरस बनाने के लिए बाप की श्रीमत है बच्चे रोज़ सवेरे-सवेरे उठ M.M.M.....imp. बड़े प्यार से बाप को याद करो। अपने को आत्मा समझो और बाबा जो सुनाते हैं उसे सुनो। अगर याद नहीं करेंगे तो फालतू ख्यालात चलेंगे, व्यर्थ संकल्प आयेंगे इसलिए बाबा राय देते हैं बच्चे रोज़ सवेरे-सवेरे उठ अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि चलते-फिरते, खाते... भोजन बनाते एक बाबा को ही याद करेंगे।

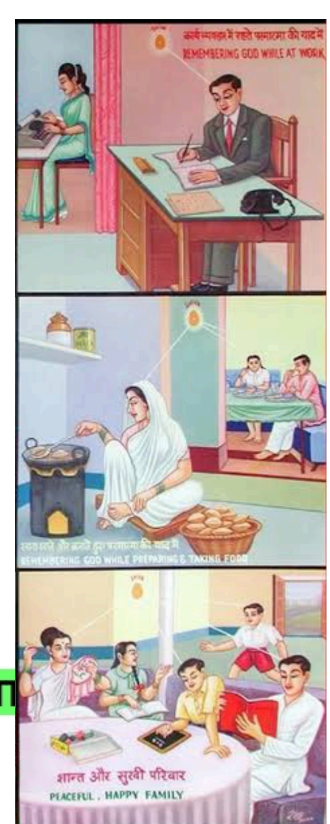

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा

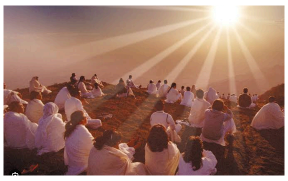
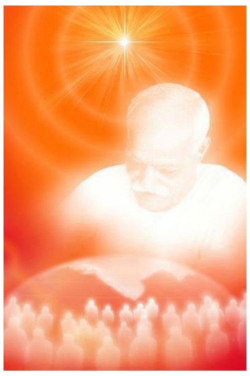

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चे जानते हैं कि रूहानी बाप है सभी रूहों का बाप जो सबसे ऊंच ते ऊंच है, उनको ही शिवाय नम: कहते हैं। फादर भी कहते हैं, वह बाप स्वर्ग का रचयिता है, जिसको पतित-पावन, ज्ञान का सागर कहा जाता है। अब तुम समझते हो हम उनके साथ बैठे हैं। यह तुम बच्चों को समझाना है। जैसे कहीं पर एक गीता पाठशाला में एक श्रीकृष्ण का लम्बा चित्र 6 फुट का था। अब श्रीकृष्ण को वास्तव में छोटा ही दिखाते हैं फिर कहते हैं गीता का भगवान था। तो भला गीता कब सुनाई? बचपन में वा जब 6 फुट का हुआ तब सुनाई? राधे और श्रीकृष्ण की जोड़ी थी। राधे, कृष्ण की क्या लगती थी? राधे को भगवती और श्रीकृष्ण को भगवान कहते हैं। इन दोनों का क्या सम्बन्ध है, यह किसको पता नहीं है। श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया, परन्तु कब? जब तुम ऐसे-ऐसे प्रश्न पूछेंगे तो मनुष्य समझ जायेंगे कि यह तो सिवाए ब्रह्माकुमार-कुमारियों के और कोई पूछ नहीं सकते। कोई भी बड़े-बड़े राजायें आदि जो भी हैं वह संन्यासियों को देख पांव जरूर पड़ेंगे। किसी को भी पूछने की हिम्मत ही नहीं रहती। तुम तो हिम्मत रखते हो।

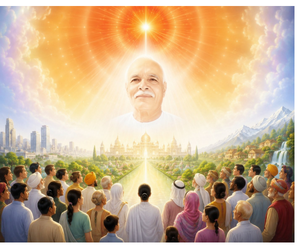

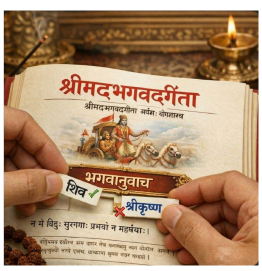

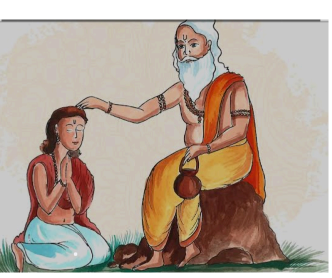

01-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

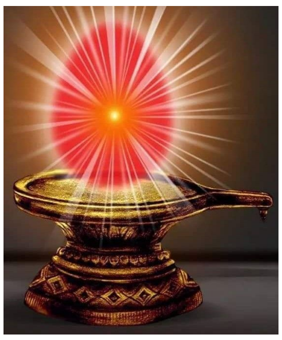

कहेंगे ब्रह्माकुमारियों में इतना ज्ञान है जो बैठ करके रचता और रचना की इतनी नॉलेज देती हैं। उनकी बायोग्राफी सुनाती हैं। तुम पूछ सकते हो कि शिव जयन्ती मनाते हो, पूजा आदि भी करते हो तो जरूर वह कभी आया होगा तब तो शिव जयन्ती मनाई जाती है? वह कब आया? शिवबाबा तो है निराकार, उनको अपना शरीर नहीं है। शिव जयन्ती मनाते हैं तो जरूर शरीर में आया होगा? निराकार की जयन्ती कैसे हो सकती है? आत्मा तो अमर है। जयन्ती तब मनाई जाती जब मरे और जन्मे। आत्मा की जयन्ती नहीं होती। आत्मा तो अविनाशी है। ऐसे नहीं कहेंगे आत्मा की जयन्ती। शिव तो है निराकार, उनका चित्र लिंग का रखा जाता है। तुम बच्चों को यह ख्यालात रहने चाहिए। यहाँ से अपने घर, धन्धे-धोरी में जाने से यह बातें ही बुद्धि से निकल जाती हैं। चिंतन नहीं चलता। गुरूओं आदि की जंजीरों में भी बहुत फँसे हुए हैं। बात मत पूछो। अबलायें बहुत भोली होती हैं ना। तुम उनसे पूछ सकते हो - शिव जयन्ती मनाई जाती है परन्तु वह है कौन? उसने क्या आकर किया और कब आया? जयन्ती माना ही बर्थ। निराकार शिव का बर्थ मनाया, वह निराकार है तो उसका फिर

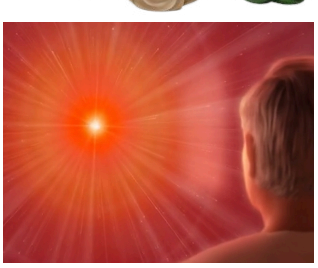

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Point to be Noted

कभी मन में था ना चीत में था
भगवान हमें मिल जाएंगे
विद्वान बड़े बुद्धिमान बड़े सब
ढूंढते ही रह जाएंगे
हम भोले भाले बच्चों को शिव
भोलानाथ करतार मिला
हमें आपसे बेहद प्यार मिला....

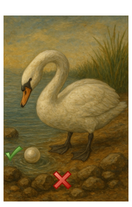

बर्थ कैसे मनाया जाता है? किसमें आया? आत्मा शरीर में जाती है तो कहा जाता है बर्थ (जन्म) हो गया। आत्मा तो आत्मा ही है। शरीर में प्रवेश करती है तो कहेंगे आत्मा ने शरीर लिया है, पार्ट बजाने लिए। वह तो है निराकार। उसने जन्म कैसे लिया? किसमें आया? उनको तो परमात्मा कहा जाता है।

But we know, How Lucky & Great we are..!

यह किसको भी पता नहीं है। भल बहुत शास्त्र आदि पढ़े हैं, परन्तु कुछ भी पता नहीं है। अभी तुम ज्ञान से भरपूर हो। अभी तुमको ज्ञान ही सुनाना है। कोई-कोई दो-तीन वर्ष आते हैं फिर अज्ञान की प्रवेशता हो जाती है। बाबा फिर अज्ञान को निकाल ज्ञान की धारणा कराते हैं। अब तुम बच्चों को ज्ञान दिया जाता है। परन्तु पुरुष ज्ञान में, स्त्री अज्ञान में तो जैसे हंस बगुले बन जाएं इसलिए पहले तो स्त्री को ज्ञान देना चाहिए। स्त्री, पति को गुरू ईश्वर मानती है तो स्त्री को गुरू की आज्ञा माननी चाहिए ना। यह यहाँ की बात है। (Heaven/सतयुग) वहाँ तो आज्ञा मानने न मानने का सवाल ही नहीं। सब प्यार से चलते हैं। (Heaven/सतयुग) वहाँ ऐसी कोई बात होती ही नहीं, तो चैरिटी बिगन्स एट होम। स्त्री ज्ञान में आती है, पति नहीं आता तो क्या कर सकती है! भूँ-भूँ करनी है। बच्चों को भी भूँ-भूँ करना

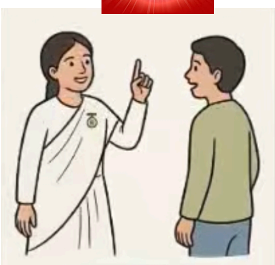

है। अपने हमजिन्स का कल्याण करें। उनको भी बतायें बाप को याद करो। अब लड़ाई सामने खड़ी है, बाबा आया हुआ है। मनुष्य पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ। जबकि पतित दुनिया का विनाश होना है तो तुम फिर पतित क्यों बनते हो! माता ज्ञान में है तो माता का काम है अपने हमजिन्स का कल्याण करना।

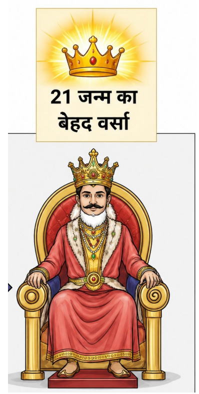

चढ़ाओ नशा...

अभी तुम बाप से 21 जन्मों के लिए सारा राज्य लेते हो। तुमको कोई हाथ लगा न सके। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। फ़र्क देखो कितना है। ऐसे वर्सा

पुछो अपने आप से...

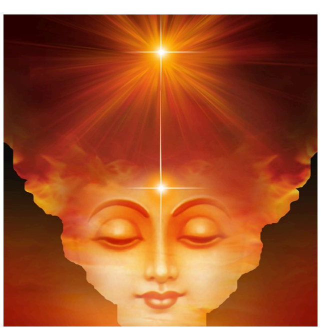

देने वाले को कितना याद करना चाहिए। यहाँ तो बहुत हैं जो सारे दिन में शिवबाबा को याद ही नहीं करते हैं। सारा दिन घर के, धन्धे धोरी के लफड़ों में ही रहते हैं। नहीं तो सवेरे उठ बाप को M.M.M.....imp. बहुत प्रेम से याद करना चाहिए। बाबा आपसे हम प्रतिज्ञा करते हैं। आपसे हम वर्सा जरूर लेंगे। बाबा आप कितने मीठे हो। आपकी याद से हमारे विकर्म विनाश होंगे। अन्दर में अपने से बात करना, उसको विचार सागर

रूह - रूहान

01-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

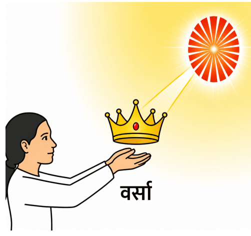

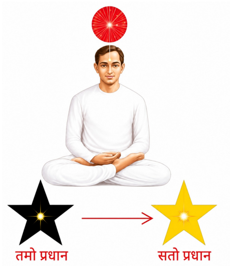

मंथन करना कहा जाता है। "बाबा आपसे हम पूरा वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। अब हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है, तब ही सतयुगी राज्य पायेंगे। बाबा आपको हम निरन्तर याद करेंगे। 63 जन्मों में हमने कितने पाप किये हैं। कितना सिर पर बोझा है इसलिए बाबा हम आपको बहुत याद करते हैं। बाबा हम खाना पकायेंगे, घूमने जायेंगे तो भी आपकी याद में रहेंगे।" ऐसे-ऐसे बातें करते प्रतिज्ञा करेंगे तो विकर्म विनाश होते जायेंगे। बाबा हम भोजन बनायेंगे आपकी याद में। हमको सतोप्रधान जरूर बनना है। "पता नहीं कल शरीर छूट जाए तो हम सतोप्रधान बनेंगे ही नहीं! मौत का डर है ना। बाबा हम जीते जी आपसे वर्सा जरूर लेंगे।" फिर देखना चाहिए कि आज के सारे दिन में हमने कितना याद किया। कोई भी हालत में याद की यात्रा में जरूर रहना है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। युक्ति से चलना है। ऐसे-ऐसे तीव्र वेग से पुरुषार्थ में लग जाएं तो याद भी रहेगी और आयु भी बढ़ेगी। भविष्य में तुम्हारी आयु बढ़ेगी, याद नहीं करेंगे तो पद भी कम हो जायेगा। पुरुषार्थ कर बाप से वर्सा तो लेना है ना और स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। जैसे हिन्दुओं

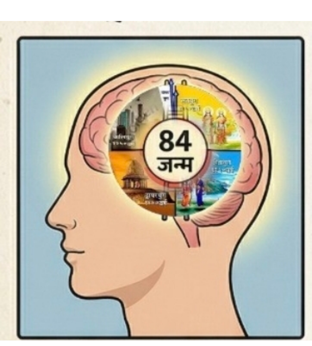

को क्रिश्चियन बनाने के लिए नन्स बहुत फिरती रहती हैं। घरों में दुकानों में जाती हैं, सबको कहती हैं बाइबिल लो, यह लो। हमारे क्रिश्चियन धर्म में बहुत सुख है। उन्हों की भी मिशन है, बौद्धियों की भी मिशन है। हिन्दू लोग यह नहीं समझते कि यह क्या करते हैं! हमारे हिन्दू धर्म वालों को क्रिश्चियन बनाते रहते हैं। तुम कितना प्रदर्शनी में समझाते हो। भल ओपीनियन भी लिखकर देते हैं। घर में गये खलास। इसके लिए गाया हुआ है - बन्दरों के आगे रत्न रखो तो वह पत्थर समझ फेंक देंगे। तो यह भी अविनाशी ज्ञान रत्न पत्थर समझ फेंक देते हैं। यह भी कुछ समझते नहीं। हाँ, जो इस धर्म वाले होंगे उन्हों को ही टच होगा। बात बहुत सहज है। बाप स्वर्ग का रचयिता है। बाप भारत में आते भी एक ही बार हैं।

बाप कहते हैं - तुम मुझ पतित-पावन बाप को बुलाते आये हो। अब मैं आया हूँ, तुमको स्वर्ग का मालिक बनाने। तुम कहते भी हो हम इस भ्रष्टाचारी सृष्टि को श्रेष्टाचारी बनाकर ही छोड़ेंगे। अभी तो सब नर्कवासी

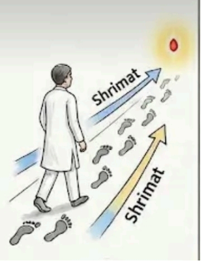

हैं। तुम अभी शिवबाबा की श्रीमत पर हो। शिव भगवानुवाच मैं तुमको स्वर्ग का मालिक, राजाओं का राजा बनाता हूँ। गीता में बड़ा अच्छा लिखा हुआ है, कहते हैं मैं इन साधुओं का भी उद्धार करने आता हूँ। तो यह उन्हों को भी सुनाना चाहिए ना। पुकारते भी हैं पतित-पावन सीताओं के राम। अब इसका अर्थ भी समझते नहीं। सब हैं भक्तियां अथवा सीतायें। वह पुकारती हैं हे राम आकर हम सीताओं का उद्धार करो। फिर कहते हैं रघुपति राघव राजा राम... वास्तव में राजा राम की बात नहीं। मुख्य भूल है यह, जो शिव के बदले श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। पूछना चाहिए श्रीकृष्ण वा राम को काला क्यों दिखाया है? सतयुग त्रेता में है ही सुन्दर फिर श्याम होते हैं। पहले है गोल्डन एज, सिल्वर एज, फिर कॉपर, आइरन एज। इस समय है आइरन एज। गोल्डन एज थी तो कितना मान था। तो युक्ति से जाकर समझाना चाहिए। वह कोई इतना जल्दी अपना हठ नहीं छोड़ेंगे। झाड़ की आयु बड़ी होती है तो झाड़ जड़-जड़ी भूत अवस्था को पाता है, आयु तो इस दुनिया की भी है ना। नई दुनिया और पुरानी दुनिया। ओल्ड माना कलियुग, तमो-प्रधान दुनिया।

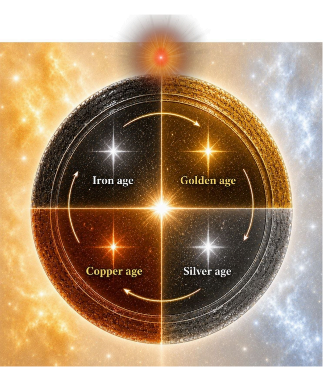

इसमें एक भी सतोप्रधान हो नहीं सकता। अब तमोप्रधान को खलास होना है। नई दुनिया कौन स्थापन करेंगे? वही बाप। ऐसे नहीं कि प्रलय होती है। बाप को पुकारते ही तब हैं जब पतित हो जाते हैं। फिर कहते हैं आकर पावन बनाओ। आयेंगे तो जरूर पुरानी दुनिया में। पतित-पावन कहते हैं तो जरूर अन्त में ही आयेंगे। खुद कहते हैं मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ - पावन दुनिया बनाने। अभी है संगम।

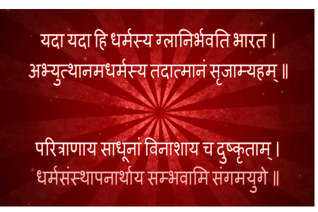

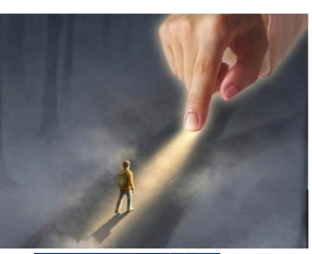

अभी बाप सबको सद्गति में ले जाते हैं। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। अपनी अवस्था को जमाना है। सवेरे उठकर बाप को याद करना चाहिए। अपने को आत्मा समझना है। यह शरीर के आरगन्स हैं। बाप कहते हैं - हे बच्चों मैं तुमको जो सुनाता हूँ, वह सुनो। मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए और कोई की बात नहीं सुनो। परमधाम से बाप आये हैं पावन बनाने। फिर तुम पुराने शास्त्रों को क्यों याद करते हो। भक्ति करते ही इसलिए हो कि भगवान

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

पुछो अपने आप से...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Exclusive Authority of Shiv baba

01-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

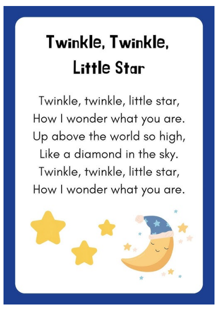

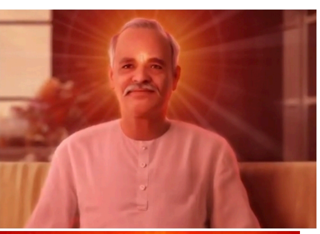

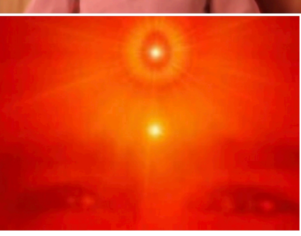

मिलेगा। वह तो सर्व का सद्गति दाता बाप है ना। बाप के सिवाए यह नॉलेज कोई दे न सके। इन लक्ष्मी-नारायण को भी यह राज्य कैसे मिला? आत्मा के लिए कहते हैं वह बिन्दी है। चमकता है अजब सितारा। बाप समझाते हैं तुम मुझे कहते हो परमात्मा सुप्रीम सोल। लौकिक बाप को कभी परमात्मा कहेंगे क्या? परमात्मा जो परमधाम में रहते हैं, उनको कहते हैं सुप्रीम सोल। वह तुम्हारा बाप है। वह आकर इसमें प्रवेश करेंगे। गुरू शिष्य के बाजू में बैठेगा ना। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। अभी तुम जानते हो वह हमारा बाप है। 5 हजार वर्ष पहले भी बाप ने योग सिखलाया था कि मुझे याद करो और

Simple Math..

विष्णुपुरी को याद करो तो जरूर संगम में ही कहेंगे। सतयुग में था एक धर्म। तो जरूर फिर एक धर्म होगा ना। इतने धर्म सब विनाश हो जायेंगे। यह टाइम वही है। बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो मैं तुमको विश्व का मालिक बनाऊंगा। बाप की याद से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। बाप कहते हैं - जो बच्चे अच्छी सर्विस करते हैं, मैं उनको याद करता हूँ क्योंकि मेरे मददगार हैं। बहुतों का कल्याण करते हैं तो वह मुझे प्यारे लगते हैं। तुमको तो एक

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

समझा..?
भगवान को कौन प्यारे है?

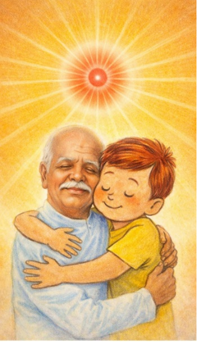

Attention..!

01-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बाप ही प्यारा लगता है जिससे वर्सा मिलता है इसलिए तुम बच्चों को अच्छी रीति पुरुषार्थ करना पड़े। याद की यात्रा में रहना है। बहुत फालतू ख्यालात भी आयेंगे। भक्ति मार्ग में अपने को मारते भी हैं, हमको शिव का दर्शन हो, बहुत मेहनत करते हैं दर्शन के लिए। यहाँ तुम समझते हो बाप की याद से पाप कट जायेंगे और 21 जन्मों के लिए वर्सा मिलेगा। दर्शन होने से कोई पाप नहीं कट जाते। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं।

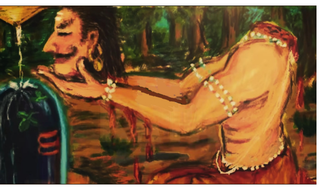

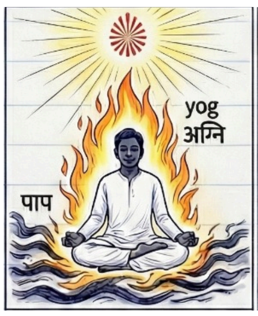

उनको तो बहुत प्रेम से याद करना चाहिए। अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि हम क्या बन रहे हैं। दूसरे जन्म में हम यह जाकर बनेंगे। यह कॉलेज ही है सतयुग का प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने का। बाप आकर धर्म के साथ डीटी किंगडम भी स्थापन करते हैं। अच्छा!

नैनो से बहते अश्कों के धारों में
हमने तुझको देखा चाँद सितारों में
बिरहा की अग्नि में पल-पल तपती है
अब तो सांसें तेरी माला जपती हैं
तेरे लिए, तेरे लिए
तेरे लिए, इस दुनिया का हर सितम है गवारा सनम

तेरे नाम हम ने किया है
जीवन अपना सारा सनम

Click

ारणा सेवा M.imp.

01-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

M.M.M.....imp.

1) बाप ने मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए जो भी ज्ञान की बातें सुनाई है, वही सुननी और धारण करनी है, बाकी सब भूल जाना है। अपना और अपने लौकिक परिवार का कल्याण करना है।

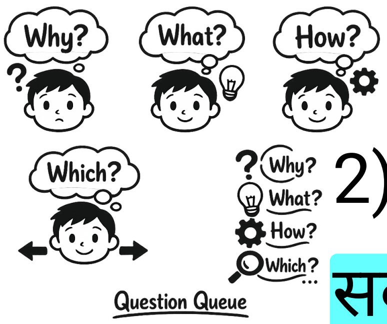

2) व्यर्थ ख्यालातों को समाप्त करने के लिए सवेरे-सवेरे उठ विचार सागर मंथन करना है। याद की यात्रा में लगे रहना है।

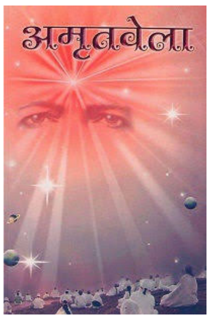

योग धारणा

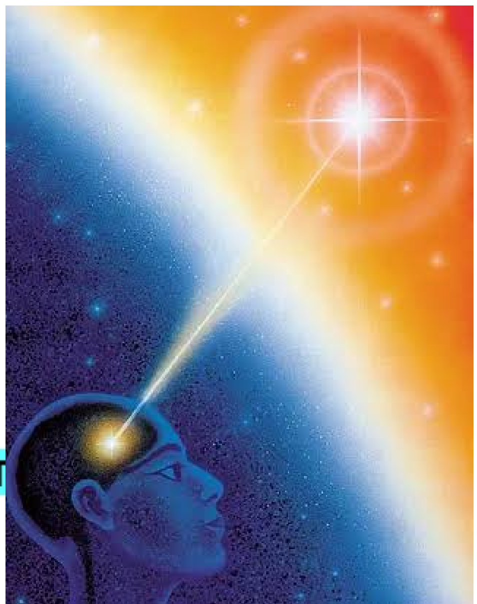

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

01-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- ज्ञान-योग की पावरफुल किरणों द्वारा पुराने संस्कार रूपी कीटाणुओं को भस्म करने वाले मास्टर ज्ञान सूर्य भव

Finale Achievement

कैसे भी पतित वातावरण को बदलने के लिए अथवा पुराने संस्कारों रूपी कीटाणुओं को भस्म करने के लिए यही स्मृति रहे कि "मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ।"

सूर्य का कर्तव्य है रोशनी देना और किचड़े को खत्म करना।

तो ज्ञान-योग की शक्ति वा श्रेष्ठ चलन द्वारा यही कर्तव्य करते रहो।

समझा?

यदि पावर कम है तो ज्ञान सिर्फ रोशनी देगा परन्तु पुराने संस्कार रूपी कीटाणु खत्म नहीं होंगे इसलिए पहले योग तपस्या द्वारा पावरफुल बनो।

स्लोगन:-शुभ भावना, शुभ कामना के श्रेष्ठ संकल्प ही जमा का खाता बढ़ाते हैं।

only

Point to ponder deeply...

Points: ज्ञान योग धारणा

01-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे -

Call of time/समय की पुकार

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

वर्तमान समय आप बच्चे अपना रहमदिल और दाता स्वरूप प्रत्यक्ष करो।

आपके सब भण्डारे निरन्तर खुले रहने चाहिए।

अनादि, आदि दातापन के संस्कार अपने जीवन में सदा इमर्ज रख, परमात्म सन्देश वाहक बन विश्व में बाप की प्रत्यक्षता का सन्देश फैलाओ।

बेहद के दाता बन वर्ल्ड के गोले पर खड़े हो, बेहद की सेवा में वायब्रेशन फैलाओ।

महान दाता बनो।

Point to be Noted

Points: ज्ञान य

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

New Arrivals

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

11.9 अपने फ़रिश्ते स्वरूप द्वारा साक्षात्कार कराओ :

मनसा सेवा पॉवरफुल कैसे हो — इसका विशेष प्लान बनाओ। वाचा के साथ-साथ मनसा सेवा भी बहुत दूर तक कार्य कर सकती है। ऐसे अनुभव होगा जैसे आजकल फ्लाइंग सॉसर देखते हैं वैसे आप सबका फ़रिश्ता स्वरूप चारों ओर देखने में आयेगा और आवाज़ निकलेगा कि "यह कौन हैं जो चक्र लगाते हैं! इस पर रिसर्च करेंगे। लेकिन आप सबका साक्षात्कार ऊपर से नीचे आते ही हो जायेगा और समझेंगे यह वही ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं जो फ़रिश्ते रूप में साक्षात्कार करा रही हैं। अभी यह धूम मचाओ। विशेष अमृतवेले शरीर से डिटैच होकर अन्त:वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास करो। यह अभ्यास ज़रूरी है। ऐसा अभ्यास करो जो प्रैक्टिकल में सब देख कर मिल कर आये हैं। दूसरे भी अनुभव करें — हाँ, यह हमारे पास वही फ़रिश्ता आया था। फिर ढूँढ़ते निकलेंगे फ़रिश्तों को। अगर इतने सब फ़रिश्ते चक्र लगायें तो ऑटोमेटिकली सबका अटेन्शन जायेगा। तो अभी साकारी के साथ-साथ आकारी सेवा भी ज़रूर चाहिए।